हिमाचल प्रदेश के पशु चिकित्सा अधिकारियों के साथ इंटरफेस बैठक

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान ने 'आजादी के अमृत महोत्सव' के अंतर्गत देश में राज्यों के पशुपालन के विभागों (एसडीएएच) के साथ इंटरफेस बैठक श्रृंखला शुरू की है। श्रृंखला की पहली इंटरफेस बैठक आज हिमाचल प्रदेश के पशु चिकित्साधिकारियों और राज्य पशुपालन विभाग तथा कृषि विज्ञान के अधिकारियों को पशु स्वास्थ्य और उत्पादन में सुधार के लिए संस्थान द्वारा विकसित नवीनतम प्रगति और प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए आयोजित की गई थी। इंटरफ़ेस मीट में कुल 457 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया और भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ बीएन त्रिपाठी , उप महानिदेशक, पशु विज्ञान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने आईवीआरआई को इस तरह के इंटरफेस मीट के आयोजन के लिए बधाई दी, जो हितधारकों लिए संस्थानों में विकसित नवीनतम तकनीकों के साथ खुद को समृद्ध करने में मदद कर रहा है । उन्होंने राज्य सरकार के अधिकारियों से आग्रह किया कि वे राज्य की सभी अवर्णनीय नस्लों को चिह्नित करें तथा क्रॉस ब्रीड की तुलना में स्वदेशी नस्लों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि पोषण सुरक्षा की मांग में पशु चिकित्सक की भूमिका अहम है और आईवीआरआई पालमपुर का क्षेत्रीय केंद्र, क्षेत्र-विशिष्ट अनुसंधान में समृद्ध योगदान देता है तथा क्षेत्र के पशुओं के पोषण प्रबंधन पर समाधान प्रदान करता है। उन्होंने पशुओं के समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए आईवीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न किसानों के अनुकूल तकनीकों, प्रथाओं के पैकेज, टीकों और निदान को सक्रिय रूप से अपनाने के लिए पशु चिकित्सा अधिकारियों से आग्रह किया । उन्होंने फील्ड पशु चिकित्सक की वास्तविक जरूरतों को पूरा करने वाले तकनीकी सत्र में प्रासंगिक व्याख्यान विषयों का चयन करने के लिए आयोजकों को बधाई दी है ।

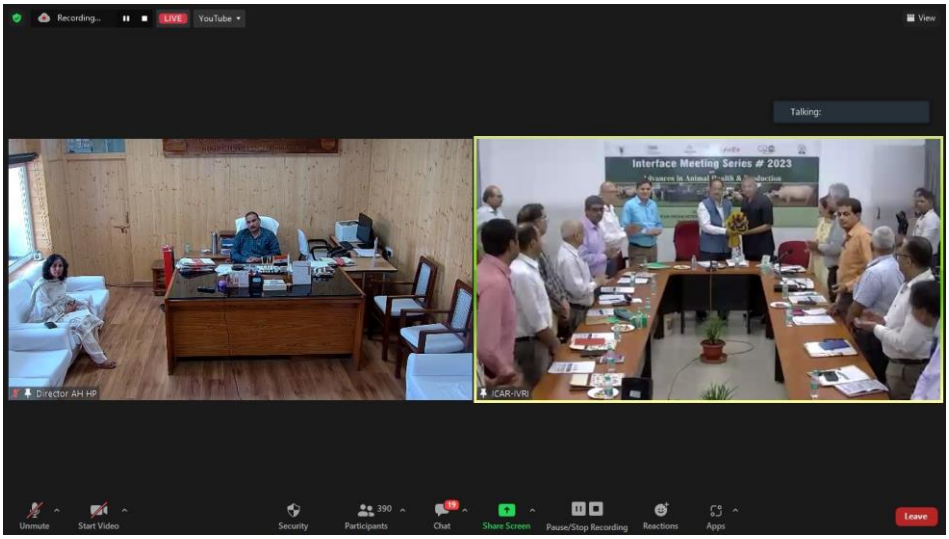

डॉ. पीके शर्मा, निदेशक, पशुपालन विभाग, हिमाचल प्रदेश ने इस तरह की इंटरफेस बैठक आयोजित करने में आईसीएआर के प्रयास की सराहना की, जो अनुसंधान संस्थान और अंतिम उपयोगकर्ता में विकसित प्रौद्योगिकी के बीच के अंतर को कम कर सकता है। उन्होंने बुनियादी ढांचे के साथ-साथ राज्य में पशुओं की विभिन्न प्रजातियों की आबादी के मामले में राज्य में पशुपालन की स्थिति की एक झलक दी। उन्होंने पशुओं के जीवन को बचाने के लिए लम्पि (एलएसडी) का टीका विकसित करने के लिए आईवीआरआई को बधाई दी। उन्होंने आगे कहा कि अभी भी लम्पि के लिए बकरी पॉक्स के टीके का उपयोग किया जा रहा है और कई पुनरावृत्तियाँ पाई गई हैं जिन्हें लम्पि की पुनरावृत्ति से बचने के तरीके खोजने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान इंटरफेस बैठक विभाग के पशु चिकित्सा अधिकारियों के निदान और उपचार में नवीनतम प्रगति के साथ ज्ञान को ताज़ा करने और अद्यतन करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है। डॉ त्रिवेणी दत्त , निदेशक, आईवीआरआई ने अपने सम्बोधन में कई बीमारियों के उन्मूलन में आईवीआरआई के उल्लेखनीय योगदान से अवगत कराया। उन्होंने आईवीआरआई में विकसित टीकों, निदान, चिकित्सा , पशु चारा प्रौद्योगिकी, मूल्यवर्धित पशुधन उत्पादों, पशु प्रजनन और प्रजनन और सर्जिकल तकनीक से संबंधित विभिन्न तकनीकों की भी जानकारी दी, जिनका उपयोग पशु स्वास्थ्य और उत्पादन में सुधार के लिए हितधारकों द्वारा किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि आईवीआरआई ने वर्तमान शैक्षणिक सत्र में कई व्यावसायिक, प्रमाणपत्र और डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू किए हैं।

इसके अतिरिक्त हितधारकों की आवश्यकता के अनुसार कई पाठ्यक्रमों को अनुकूलित किया जा रहा है। आईवीआरआई ने पूर्व में भी राज्यों की आवश्यकता के अनुसार क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया है । राज्यों द्वारा अनुरोध किए जाने पर विशेष क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जा सकता है। उन्होंने इस तरह की बैठक आयोजित करने पर प्रसन्नता व्यक्त की, जो देश में पशुधन क्षेत्र के व्यापक और समग्र विकास के लिए राज्य पशुपालन विभाग के साथ घनिष्ठ सहयोग विकसित करने में मदद करेगी। इस अवसर पर संयुक्त

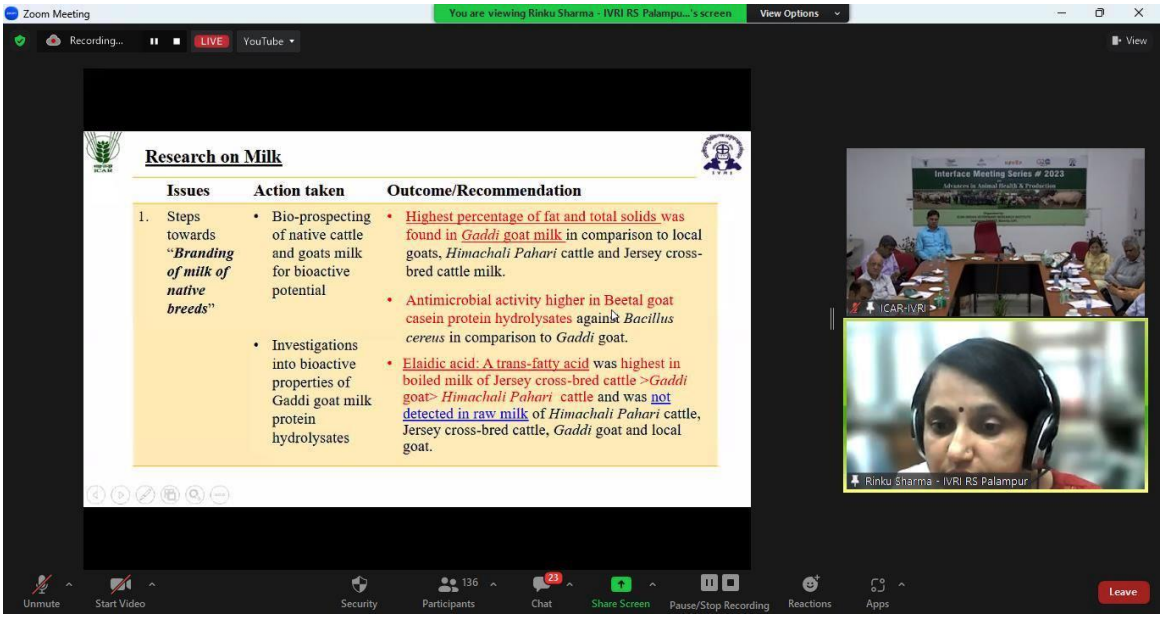

निदेशक (प्रसार शिक्षा), डॉ. रूपसी तिवारी ने सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने पिछली इंटरफेस बैठक में चिन्हित क्षेत्रों में आईवीआरआई द्वारा की गई कार्रवाई का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने प्रतिभागियों के विवरण, बैठक के शासनादेश के साथ-साथ इस

बैठक से प्रतिभागियों की अपेक्षाओं के बारे में भी मीटिंग में बताया। उन्होने कहा कि प्रतिभागियों से एकत्र की गई जानकारी से संकेत मिलता है कि पेन साइड डायग्नोस्टिक सुविधा की कमी, पौधों की विषाक्तता, प्रयोगशाला के बुनियादी ढांचे की कमी, सीमित शल्य चिकित्सा कौशल हिमाचल प्रदेश के फील्ड पशु चिकित्सकों के सामने आने वाली सबसे आम समस्याएं हैं। उन्होने इसके निदान हेतु मूल्यवर्धन, प्रजनन स्वास्थ्य के प्रबंधन , पोस्टमार्टम तकनीक, साइलेज और एजोला बनाने की तकनीक, रेडियोग्राफी, यूएसजी, रक्त आधान और विष विज्ञान जांच के क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवशयकता जतायी । उन्होने हिमाचल प्रदेश के पशु चिकित्साधिकारियों को हीमोप्रोटोज़ोन रोग की व्यापकता, देशी अपरंपरागत चारे का उपयोग, पशु स्वास्थ्य और उत्पादन में स्वदेशी पौधों की मान्यता, खनिजों और आहार की कमी के संबंध में बांझपन, बड़े जानवरों में एटाबॉलिक विकार और एंटीबायोटिक प्रतिरोध पैटर्न में व्यवस्थित अध्ययन करना चाहिए।

इस अवसर पर आईवीआरआई के आईटीएमयू प्रभारी, डॉ अनुज चौहान ने पशु स्वास्थ एवं उत्पादन में विकसित प्रोध्योगिकियाँ तथा आईवीआरआई द्वारा शैक्षणिक सत्र 2023-24 में शुरू किए गए 90 से अधिक नए वोकेशनल, सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स के बारे में; संयुक्त निदेशक डॉ के पी सिंह ने पशुओं में लम्पि रोग; संस्थान के पशु पुनरुत्पादन विभाग के डॉ बृजेश द्वारा बांझपन और प्रजनन संबंधी समस्याएं और समाधान; संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता केंद्र, प्रभारी डॉ पी. एस. बनर्जी द्वारा हिमाचल प्रदेश के पशुओं में हेमोप्रोटोज़ोन, ट्रिप्ननेसोमोसिस' थिलेरोसिस तथा बबेसिओसिस रोग के बारे तथा पालमपुर केंद्र के डॉ रिंकू शर्मा द्वारा हिमाचल प्रदेश में पशु स्वास्थ्य और उत्पादन की क्षेत्रीय समस्याओं पर विस्तृत प्रस्तुति दी। और प्रतिभागियों को अवगत कराया गया।

इसके अतिरिक्त प्रतिभागियों द्वारा पशुओं की विभिन्न बीमारी से संबन्धित जिनमें पशुओं में फ्रेक्चर, बांझपन और प्रजनन संबंधी, इम्यूनोजिकल्स के उत्पादन की दिशा में हुई प्रगति , फॉस्फोरस की खुराक और एनेस्ट्रस में रेजिमेन, हेमोप्रोटोज़ोन संक्रमण में स्टेरॉयड, की भूमिका जैसे कई प्रश्न उठाए, जिनका आईवीआरआई के विशेषज्ञों ने उपयुक्त उत्तर दिया।

कार्यक्रम का संचालन आईटीएमयू प्रभारी, डॉ अनुज चौहान ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन पालमपुर केंद्र के प्रभारी डॉ गोरखमल द्वारा किया गया । इस अवसर पर सभी संयुक्त निदेशक, विभागाध्यक्ष, प्रभारी, अधिकारी मौजूद रहे ।